



(E - 109)  
तुम्हारे दर्श  
बिन स्वामी

१०६.

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहि चैन पडती है;  
छवी वैराग तेरी सामने, आंखो के फिरती है। (टेक)  
निराभूषण विगत दूषण; परम आसन मधुर भाषण;  
नजर नैनों की नाशा की, अनी पर से गुजरती है। १  
नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणन में;  
तेरे दर्शन से सुनते हैं, कर्म रेखा बदलती है। २  
मिले गर स्वर्ग की सम्पत्ति; अचम्भा कौनसा इसमें;  
तुम्हें जो नयन भर देखे; गती दुरगति की टरती है। ३

**Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250**

श्री ढलंगर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - 354240

( 129 )

---

हजारों मूर्तियां हमने बहुतसी, अन्यमत देखी;  
शांति मूरत तुम्हारीसी, नहीं नजरों में चढती है। ४  
जगत सिरताज हो जिनराज, 'सेवक' को दरश दीजे;  
तुम्हारा क्या बिगडता है, मेरी बिगडी सुधरती है। ५

